ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

SANSKRITIK PRAVAH

Research Journal

वर्ष 10 अंक 2 अगस्त, 2023

Bi-annual Bi-lingual

A Multi Disciplinary Peer Reviewed (Refereed)
Research Journal
Dedicated to Socio-Cultural Harmony.

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.)

Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan

www.sanskritikpravah.com

Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 2200 (5 years)	Rs. 6000 (15 years)
Individuals (Rajasthan)	-	Rs. 1000 (5 years)	Rs. 2700 (15 years)
(Out of Rajasthan)	-	Rs. 1100 (5 years)	Rs. 3000 (15 years)
Single Copy	-	Rs. 125/-	

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of
Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the **'Sanskritik Pravah' Research Journal** accepts no responsibility for them.

Correspondence and Contact

सांस्कृतिक प्रवाह

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

E-mail : editor.sprj@gmail.com
: ramsjaipur@gmail.com
website : www.sanskritikpravah.com
Contact : 0141-4038590 (4 PM Onwards), 094143-12288 (Chief Editor)
094600-70031(Editor)

Published by : Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
B-19, Madhukar Bhawan, New Colony, Jaipur-302001

Printed at : Payorite Print Media Private Limited, Udaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

वर्ष 10 अंक 2 अगस्त 2023

अर्द्धवार्षिक द्वि-भाषी

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए समर्पित एक बहु-विषयात्मक सहकर्मी समीक्षित (Peer Reviewed) शोध पत्रिका

website : www.sanskritikpravah.com

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

Sanskritik Pravah Research Journal

Patron

Sh. Ramprasad
Social Worker & Guardian, Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur (Raj.)

Editorial Advisory Board

Dr. Kuldeep Chand Agnihotri
Ex Vice Chancellor, Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala (H.P.)

Prof. Bhagirath Singh
Ex Vice Chancellor,
Pandit Deen Dayal Upadhyay University, Sikar (Raj.)

Dr. Bhagwati Prasad Sharma
Ex Vice Chancellor, Gautam Buddha University, Greater Noida (U.P.)

Prof. J. P. Sharma
Ex Vice Chancellor,
MLS University, Udaipur (Raj.)

Prof. M. L. Chhipa
Ex Vice Chancellor,
A.B. Vajpayee
Hindi University, Bhopal (M.P.)

Prof. Vibha Upadhyay
Ex Head, Department of History and Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur

Prof. Alpana Kateja
Vice Chancellor,
University of Rajasthan, Jaipur (Raj.)

Dr. Shreerang Godbole
Endocrinologist, Social Worker & Writer,
Pune (Maharastra)

Managing Editor

Dr. Ram Karan Sharma
Ex Principal & Head,
Deptt. of Law and Management,
NIMS University, Jaipur (Raj.)
H-28, Haldighati Marg,
Jaipur-302018

Chief Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal
Ex Principal, Govt. Law College,
Kota & Sriganganagar (Raj.)
72/25, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur-302020
E-mail : ramsjaipur@gmail.com
Mobile : 09414312288

Editor

Dr. Gopal Sharan Gupta
Secretary,
Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvay Sansthan, Jaipur
E-mail : gsgupta1960@gmail.com
Mobile : 09460070031

Associate Editor

Dr. Indrajeet Bhattacharya
Member, Museum Association of India,
Member, ICOMOS INDIA
Res. : 143, Indira Colony, Bani Park, Jaipur
E-mail : indrajeet201070@gmail.com
Mobile : 9571806910

Guest Editor

Dr. Suraj Rao
Deputy Registrar
MDS University, Ajmer (Raj.)
E-mail : suraj1973@gmail.com
Mobile : 94602 46641

Editorial Board

Dr. Sunil Asopa
Professor, Deptt. of Law,
J.N.V. University, Jodhpur
61-B, Laxmi Nagar, Jodhpur-324006,
E-mail : sunasopa@gmail.com,
Mobile : 09414294406

Dr. Jyanti Lal Khandelwal
Assistant Professor,
Apex University, Jaipur (Raj.)
Email : jl1974khandelwal@gmail.com
Mobile : 9314640220

Dr.Pramila Dubey,
Dean, faculty of Education
(University of Rajasthan) , Principal,
SSG Pareek P.G. College of Education, Banipark, Jaipur
Mobile : 09413156597

Dr Kailash Chand Gurjar
Assistant Professor, Deptt. of History,
M.L.S. University, Udaipur(Raj)
W- 6 , Nehru Hostel, Hiran Magari,
Sector -3, Udaipur-313001
E-mail : kailashchand191977@gmail.com
Mobile : 09929089995

About Contributors of this issue

1. **अभय कुमार शुक्ल**

   हिन्दी एवं संस्कृत में एम.ए. तथा बी.एड. शिक्षा प्राप्त। आपके राष्ट्रधर्म में कई लेख प्रकाशित। आप वर्तमान में धर्मजागरण समन्वय में पूर्वी उत्तरप्रदेश के क्षेत्र प्रमुख हैं।

2. **डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर**

   एम.ए., पीएच.डी. शिक्षा प्राप्त। 6 पुस्तकें एवं 20 शोध पत्र प्रकाशित, 45 अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सेमिनार/कॉन्फ्रेन्स में शोध पत्र प्रस्तुत करने के साथ ही कइयों में बीज भाषण दिया।

   सम्प्रति - मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के इतिहास विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत।

3. **डॉ. रजनी मीणा**

   एम.ए. पीएच.डी. शिक्षा प्राप्त। 'राजपूताने के सैनिकों का विदेशी अभियान' विषय पर शोध कार्य, भारतीय संस्कृति की धाराएँ, Economic and Social History of Ancient India, राजपूताने की सेना, ब्रितानी साम्राज्यवाद और वैदेशिक अभियान एवं इम्पीरियल सर्विस ट्रूप नामक पुस्तकों का प्रकाशन। अनेक शोध पत्रिकाओं में शोध पत्रों का प्रकाशन।

   सम्प्रति - राजकीय पी.जी. महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर) के इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग में सह आचार्य।

4. **डॉ. भगवान दास पटेल**

   आदिवासी अकादमी (तेजगढ़, बडोदरा) के पूर्व मानक निदेशक, भील जनजाति के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने के क्रम में 1500 ऑडियो कैसेट, 50 वीडियो कैसेट एवं 1500 अदिमानव के औजारों का संकलन किया। साहित्य अकादमी, भाषा सम्मान एवं दक्षिण कोरिया का श्री टैगोर लिट्रेचर एवार्ड सहित कई सम्मान प्राप्त प्रागैतिहासविद्।

5. **डॉ. सूरज राव**

   विगत 20 वर्षों से भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास पर गंभीर शोध कार्य। लगभग 132 शोध पत्र जिसमें 60 शोध पत्र भारतीय और विदेशी प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित। 10 पुस्तकें प्रकाशित, चार पुस्तकें इसी वर्ष प्रकाशित होगी। वर्तमान में महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर में उप कुल- सचिव के पद पर कार्यरत।

6. **राहुल सैनी**

एम. ए. इतिहास, (दिल्ली विश्वविद्यालय) 2021, जेआरएफ (इतिहास) 2020, शोधार्थी इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (2022)

7. **जग जितेन्द्र सिंह**

शिक्षा एम.ए., बी.एड.। कई लेख प्रकाशित हुए हैं। वर्तमान में प्रिंसीपल हैं राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बड़ा महुआ, भीलवाड़ा (राज.) में।

8. **डॉ. अनिता जैन**

एम.ए., पीएच.डी., हिन्दी की जानी मानी लेखिका। 17 पुस्तकें प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ मुक्तकार, कथा शिल्पी।

सम्मान - सर्वश्रेष्ठ मुक्तकार, कथा शिल्पी सम्मान, देशभक्ति रत्न सम्मान, परमवीर सृजक सम्मान, काव्य रत्न सम्मान आदि अनेक साहित्यिक सम्मान प्राप्त।

सम्प्रति - रिसर्च एसोसिएट (आई.टी. कम्पनी) एवं अतिथि प्राध्यापिका, संस्कृत (मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय में)

9. **डॉ. अंजना अग्रवाल**

एम.ए., एम.एड., पीएच.डी. शिक्षा प्राप्त। आपके कई शोध लेख प्रकाशित हुए हैं।

सम्प्रति - आप वर्तमान में संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर में सहायक आचार्य पद पर कार्यरत हैं।

अनुक्रमणिका/ CONTENTS

		पृष्ठ संख्या
	संपादकीय ...	8
1.	**भारतीय वाङ्मय में धर्म की अवधारणा** - अभय कुमार शुक्ल	10
2.	**सुवर्णभूमि का भारतीय संस्कृतिकरण** - डॉ. रजनी मीणा	24
3.	**भारतीय वाङ्मय एवं जीवन मूल्य** - डॉ. अंजना अग्रवाल	35
4.	**लोकदेवता - भगवान देवनारायण** - जग जितेन्द्र सिंह (विक्रम)	41
5.	**समाज की नैतिक एवं आर्थिक उन्नति में अस्तेयव्रत की भूमिका** - डॉ. अनिता जैन	50
6.	**Shaivism /Shiva sect in the Ancient Rajasthan** - Dr. Suraj Mal Rao	61
7.	**The Ramakatha Narrative Tradition in Dang Area of Gujrat** - Dr. Bhagwan Das Patel	71
8.	**The Economic Empowerment Ideas of Jyotirao Phule** - Rahul Saini	95
9.	**The Forgotten Women Warriors of 1857 War** - Dr. K. C. Gurjar	106
•	**Guidelines for authors**	116
•	**Review & Publication Policy, Ethics Policy**	119
•	**शोध पत्र हेतु मुख्य विषय**	120

संपादकीय

लोक मानस की अन्तः चेतना ही सांस्कृतिक उत्स

संस्कृति एक अति-व्यापक अवधारणा है जो मानव के समस्त कला प्रयोजनों एवं लोक व्यवहार में प्रतिबिम्बित होती हैं। भाषा, संस्कार, आचार एवं उसका भौतिक उन्नयन व लोक व्यवहार संस्कृति को एक स्वरूप प्रदान करता हैं। विश्व रंगमंच पर अनेकानेक संस्कार विकसित होकर विविध संस्कृतियों के रूप में पल्लवित और पुष्पित हुई। प्रकृति एवं सतत मानवीय संघर्ष के कारण काल के गाल में समा गई या उनकी मूल सांस्कृतिक चेतना अतिक्रमित हो गई। ऐसा भी देखा गया है कि दबी कुचली मूर्च्छित सांस्कृतिक चेतना उस बीज की तरह होती है जो अनुकूल वायु-हवा पाकर पुनः जीवित हो उठी। इजरायल इसका सबसे बड़ा सबूत माना जा सकता है। जिसने लोकमानस में बिखरी कुंद पड़ी सांस्कृतिक (विरासत) चेतना को मुखर कर दिया। भारतीय लोकमानस व्यापकता में सनातन जीवन मूल्य सहज भाव से रक्षित एवं संरक्षित रहे हैं। सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप की लोक संस्कृति का आधार लोक मानस उन तत्त्वों को संरक्षित करने हेतु यत्नवत रहा। वैसे तो सनातन संस्कृति के समस्त प्रतिमान लोक जीवन में सहज रूपेण व्यवहारित होते प्रतीत होते हैं। ये सांस्कृतिक प्रतिमान लोक व शिष्ठ के साथ जनजातिय, संस्कृतियों के लोकाचार के आलम्बक भी रहें। वर्तमान का युग राम का युग माना जा रहा है। जहाँ सर्वोच्च न्यायालय ने राम मंदिर बनाने के आदेश दिये तो भारत का एक अति विस्तृत लोकमानस हर्षित हो उठा। यह लोकमानस की वह सनातन अवचेतन की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है, जो आज हर्षातिरेक होकर अभिव्यक्त हो रही है। क्योंकि भगवान 'राम' हमारी सांस्कृतिक चेतना के एक ऐसे ज्योतिपुंज है जो साधारण से अति साधारण लोक से शिष्ठ, जाति से जनजातिय के अध्यात्मिक आचारण में समस्त लोकाचार में दीप्त होते हैं। भारती उपमहाद्वीप, हिन्दूकुश से लेकर जावा, सुमात्रा, बाली, कम्बोडिया तक एक ही भावधारा में राम और रामकथा का आदर्श लोक का आलोक बनकर प्रकाशित है। लोकमानस की अन्तः चेतना बने राम की उपस्थिति का फलक अति विस्तृत है। जहाँ चीन, जापान, इजिप्ट (मिश्र) की लोक संस्कृतियों में राम एवं राम सदृश्य राजा का आदर्श भारतीय संस्कृति का विस्तार गर्वोक्ति प्रदान करता है। विश्व के प्राचीनतम साहित्य के लोकबिम्ब लोक साहित्य कथा, गाथा के मिथ और स्थापत्य में राम-सीता-लक्ष्मण की उपस्थिति ने इस विषय में फैली हुई अनेक भ्रान्तियों का निराकरण किया है। यह तथ्य लोक चेतना के माध्यम से सांस्कृतिक शोध के नवीन सोपानों की ओर संकेत भी करते हैं।

भारतीय सांस्कृतिक चेतना के भीतर अध्यात्म की एक धारा निरन्तर प्रवाहित रही। वह अध्यात्म

की धारा, वह रामनाम की धारा जहाँ जन्म, विवाह और मृत्यु के समस्त संस्कारों में राम भक्ति गायन की सरस सहज ग्राम्य भाव में निरन्तर वर्तमान रही है। यही सांस्कृतिक चेतना सम्पूर्ण उपमहाद्वीप को एक अदृश्य स्नेह सूत्र में आबद्ध करती है। यह लोकमानस की ताकत हैं कि संस्कृतियों के विघटनोपरांत संस्कृति के सूक्ष्म तत्त्व लोकमानस में अनुश्रुतियाँ बनकर सुरक्षित रही और जो लोक व्यवहार के आश्रय से हजारों हजार वर्षों तक अक्षुण्ण हैं। राम, सीता और लक्ष्मण की मूर्तिमान सत्ता लोक की अक्षुण्णता को उजागर करते हैं। सत्य, दया, दान और तप धर्म के चार अंग लोक में आध्यात्मिक आचरण बनकर व्यवहृत रहे। त्याग, तपस्या, दया, करूणा के साथ आत्म कल्यांणक भाव में प्रकृति की जागृत सत्ता यर्थाथ मानस की मूल संवेदना है। जो सनातन चिन्तन को व्यष्टि सं समष्टि की ओर ले जाता है। इस महापथ की कालयात्रा '**अमृतस्य पंथा अनुचरेम्**' ही हमारा सांस्कृतिक उत्स है। लोक मंगल, दिव्य जीवन की अपरिमित गरिमा मानव को '**अमृतस्य पुत्राः एवं श्रृवन्तु**' विश्वे अतृत्यस्य पुत्रा की मूर्त चेतना सनातन वैभव को अक्षय–अक्षुण्ण रखती है।

संस्कृति का सम्पूर्ण शिल्पगत वैभव सनातन को सजीव आध्यात्मिक संस्कृति के रूप में प्रतिष्ठित करता है। क्योंकि लोक चेतना का सांस्कृतिक प्रवाह कालजय बनकर निरन्तर गतिमान है। आध्यात्मिक वैभव पर दृष्टिपात करें तो सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक फलक पर एक–सदृश्य विचारों का प्रवाह एवं एक जैसे चिंतन का प्रस्फुटन दृष्टिगत होता है। आत्म संस्कृति वैशिल्पानि..... यही सनातन का सांस्कृतिक शिल्प है।

– डॉ. सूरज राव
अतिथि संपादक

Guideline For Authors

1. Articles should be submitted through e-mail us at editor.sprj@gmail.com or ramsjaipur@gmail.com A hard copy of the same must be sent by post or by hand.
2 The manuscript should be typed in Page Maker or M.S. Word on A4 size paper. For Hindi, use 14 point font size for text, 25 point size for main heading and 15 point font size for sub headings. For English, use 12 point font size for text, 24 point size for main heading and 13 point font size for sub headings. For English, use Times New Roman Font and for Hindi, Devlys 010 or Chanakya Font.
3. All references should be given at the end of the article.
4. For the Citation and References, Guidelines specified in the Publication Manual of the American Psychological Association (6th edition, 2009) must be followed.
5. All acknowledgements if any, should be given at the end of the article and before the references.
6. Care should be taken to avoid spelling error & grammatical mistakes.
7. If 'Slokas' from Sanskrit text are referred in any article, please give their Hindi translation also.
8. The article / research paper shall be published subject to recommendation of referees.
9. Author should furnish their short introduction, mailing address, e-mail and phone / mobile numbers.

Detailed Submission Guideline

1. Manuscript:

The manuscript should be structured as follows:

- Cover page, showing title of the paper, name of author, author's affiliation and institutional address with pin code, email id and a 200–250 word abstract.
- Authors' names and references should not be used in the text in order to keep authors' anonymity (e.g., 'as the author has written elsewhere' should be avoided). In case there are two or more authors, then corresponding author's name and address details must be clearly specified on the first page itself.
- The contributors should also provide 4–5 keywords for online search.
- Text should start on a new page, and must not contain the names of authors.
- References should come at the end of the manuscript.
- Tables and figures should be provided in editable format and should be referred to in the text by number separately (e.g., Table 1) not by placement (e.g., see Table below). They should each be submitted on a separate page following the article, numbered and arranged as per their references in the text. They will be inserted in the final text as indicated by the author. Source citations with tables and figures are required irrespective of whether or not they require permissions.
- Figures, including maps, graphs and drawings, should not be larger than page size. They should be numbered and arranged as per their references in the text. All photographs and scanned images should have a resolution of minimum 300 dpi and 1500 pixels and their format should be TIFF or JPEG. Permissions to reprint should be obtained for copyright protected photographs/images. Even for photographs/images available in the public domain, it should be clearly ascertained whether or not their reproduction requires permission for purposes of publishing. All photographs/scanned images should be provided separately in a folder along with the main article.
- Mathematical formulae, methodological details etc. should be given separately as an appendix, unless their mention in the main body of the text becomes essential.

2. Language

a. The language and spellings used should be British (U.K.), with 's' variant, e.g., globalisation instead of globalization, labour instead of labor. For non-English and uncommon words and phrases, use italics only for the first time. Meaning of non-English words should be given in parenthesis just after the word when it is used for the first time.

b. Articles should use non-sexist and non-racist language.

c. Spell out numbers from one to ninety nine, 100 and above to remain in figures. However, for exact measurement (e.g., *China's GDP growth rate 9.8 per cent*) use numbers. Very large round numbers, especially sums of money, may be expressed by a mixture of numerals and spelled-out numbers (*India's population 1.2 billion*).

d. Single quotes should be used throughout. Double quote marks are to be used within single quotes. Spellings of words in quotations should not be changed. Quotations of 45 words or more should be separated from the text.

e. Notes should be numbered serially and presented at the end of the article. Notes must contain more than a mere reference.

f. Use 'per cent' instead of % in the text. In tables, graphs etc, % can be used. Use '20th century', '1990s'.

g. Only the first word of title and subtitle should start with capitals. Although proper names are capitalised, many words derived from or associated with proper names, as well as the names of significant offices are lowercased. While the names of ethnic, religious and national groups are capitalised (*the Muslims, the Gurkhas, the Germans*), designations based loosely on colour (*black people*) and terms denoting socio-economic classes or groups (*the middle class, the dalits, the adivasis, the african-american*) are lowercased. All caste, tribe and community names (*the Santhals, the Jatavs*) are to be capitalised but generic terms (*the kayasths*) are to be lower cased. Civil, military, religious, and professional titles (*the president*) and institutions (*the parliament, the united nations*) are to be put in lower case, but names of organisations (*the Labour Party, the Students Federation of India*) are to be capitalised. The names of political tendencies (*the marxists, the socialists*) should remain in lower case.

h. Abbreviations are spelled out at first occurrence. Very common ones (*US, GDP, BBC*) need not be spelled out. Other commonly used abbreviations (*am, pm, cm, kg, ha*) can be used in lower case, without spaces.

3. Citations and References

Guidelines specified in the *Publication Manual of the American Psychological Association* (6th edition, 2009) must be followed.

References:

- A consolidated listing of all books, articles, essays, theses and documents referred to (including any referred to in the tables, graphs and maps) should be provided at the end of the article.
- Arrangement of references: Reference list entries should be alphabetized by the last name of the first author of each work. In each reference, authors' names are inverted (last name first) for all authors (first, second or subsequent ones); give the last name and initials for all authors of a particular work unless the work has more than six authors.
- If the work has more than six authors, list the first six authors and then use et al. after the sixth author's name.
- Chronological listing: If more than one work by the same author(s) is cited, they should be listed in order by the year of publication, starting with the earliest.
- Sentence case: In references, sentence case (only the first word and any proper noun are capitalized – e.g., 'The software industry in India') is to be followed for the titles of papers,

books, articles, etc.

- Title case: In references, Journal titles are put in title case (first letter of all words except articles and conjunctions are capitalized – e.g., Journal of Business Ethics).
- Italicize: Book and Journal titles are to be italicized.

Some examples are given below:

In-text citations:

- One work by one author: (Kessler, 2003, p. 50) or 'Kessler (2003) found that among the epidemiological samples...'
- One work by two authors: (Joreskog & Sorborn, 2007, pp. 50–66) or Joreskog and Sorborn (2007) found that..
- One work by three or more authors: (Basu, Banerji & Chatterjee, 2007) [first instance]; Basu et al. (2007) [Second instance onwards].
- Groups or organizations or universities: (University of Rajasthan, 2007) or University of Rajasthan (2007).
- Authors with same surname: Include the initials in all the in-text citations even if the year of publication differs, e.g., (I. Light, 2006; M.A. Light, 2008)
- Works with no identified author or anonymous author: Cite the first few words of the reference entry (title) and then the year, e.g., ('Study finds', 2007); (Anonymous, 1998).
- If abbreviations are provided, then the style to be followed is: (National Institute of Mental Health [NIMH], 2003) in the first citation and (NIMH, 2003) in subsequent citations.
- Two or more works by same author: (Gogel, 1990, 2006, in press)
- Two or more works with different authors: (Gogel, 1996; Miller, 1999)
- Secondary sources: Allport's diary (as cited in Nicholson, 2003).
- Films: (Name of the Director, Year of release)

References:

Books: Patnaik, U. (2007). *The republic of hunger*. New Delhi: Three Essays Collective.

Edited Books: Amanor, K. S., & Moyo, S. (Eds.) (2008). *Land and sustainable development in Africa*. London/New York: Zed Books.

Translated books: Amin, S. (1976). *Unequal development* (trans. B. Pearce). London and New York: Monthly Review Press.

Book chapters: Chachra, S. (2011). *The national question in India. In S. Moyo and P. Yeros* (Eds), Reclaiming the nation (pp. 67–78). London and New York: Pluto Press.

Journal articles: Foster, J. B. (2010). The financialization of accumulation. *Monthly Review*, 62(5), 1-17.

Newsletter article, no author: Six sites meet for comprehensive anti-gang intiative conference. (2006, November / December). *OOJDP News @ a Glance*. Retrieved from http://www.ncrjs.gov/html

[Please do not place a period at the end of an online reference.]

Newspaper article: Schwartz, J. (1993, September 30). Obesity affects economic, social status. *The Washington Post*, pp. A1, A4.

In-press article: Briscoe, R. (in press). Egocentric spatial representation in action and perception. Philosophy and Phenomenological Research. Retrieved from http://cogprints.org/5780/1/ECSRAP.F07.pdf

Non-English reference book, title translated into English: Real Academia Espanola. (2001). *Diccionario de la lengua espanola* [Dictionary of the Spanish Language] (22nd ed.). Madrid, Spain: Author.

Special issue or section in a journal: Haney, C., & Wiener, R. L. (Eds.) (2004). Capital punishment in the United States [Special Issue]. *Psychology, Public Policy, and Law*, 10(4), 1-17.

Review & Publication Policy

1. There is a board of eminent scholars of various discipline to review the quality of research articles. Articles received for publication are sent to these reviewers. They go through and evaluate the articles. All traces of author's identity are removed from the article before it is sent to the reviewer.
2. Only original and unpublished articles are accepted for publication fulfilling norms of research methodology.
3. We do not accept any charges for submission and publication of articles.
4. It is a multidisciplinary journal dedicated to Socio-Cultural Harmony. Thus, articles for publication are preferred on any subject mentioned in the Thrust Area (See at page no. 102).
5. The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and do not necessarily represent the views of the editor. The 'Sanskritik Pravah' accepts no responsibility for them.
6. The submitting author shall be informed about the selection of the article by e-mail only. Articles not accepted for publication will not be returned to the authors.
7. The article must be accompanied with an understanding that the same has not been published elsewhere and is not under review by another publication.
8. The article shall be published subject to recommendation of referees.

Ethics Policy

1 Fabrication or falsification of data with the intent to mislead is unethical as is thetheft & copy of contents from others.
2. Research papers are accepted on the understanding that their contents are original and unpublished and not submitted for publication any where else. A certificate to this effect should accompany with the article.
3. Reproducing text from other papers without properly crediting the source is not acceptable. Authors should acknowledge the work of others used in their research and cite their publications.
4. Articles should not contain any material that is unlawful or defamatory.
5. Articles should use non-sexiest and non-racist language.
6. All those who have made a significant contribution should be cited as authors. Other individuals who have contributed to the work should be acknowledged.
7. The submitting author is responsible for ensuring that the article's publication has been approved by all the other co-authors.
8. The submitting author should ensure :
   - That the work has not been published before (except in the form of an abstract or as part of a published lecture, review or thesis).
   - That the work is not under consideration elsewhere.
   - That the copyright has not been breached in seeking its publications.
   - That the publication has been approved by responsible authorities at the institute or organisation where the work has been carried out.

आमंत्रण

शोध पत्र के मुख्य विषय

'सांस्कृतिक-प्रवाह' शोध पत्रिका में प्रकाशन हेतु निम्नलिखित विषयों एवं इनके अनुसांगिक विषयों पर शोध-पत्र आमंत्रित हैं। (उपबिन्दु मुख्य विषयों को स्पष्ट करने के लिए उदाहरणार्थ ही हैं।)

1. **सामाजिक समरसता**
   - सामाजिक समरसता की अवधारणा, आवश्यकता, महत्त्वपूर्ण घटक, इतिहास, वर्तमान दशा।
   - सामाजिक समरसता को प्रभावित करने वाले कारक, सामाजिक समरसता के अग्रदूत संत/महापुरुष/समाज सुधारक, सामाजिक समरसता के लिए वर्तमान में कार्यरत संस्थाएँ
   - समाज को जोड़ने वाले तत्व (यथा मातृभूमि के प्रति समान भाव, सांस्कृतिक एकता के तत्व, समान पूर्वज व समान विरासत, समाज के विभिन्न वर्गों में परस्पर स्नेह व्यवहार इत्यादि)
   - धर्मग्रंथों/संतों की वाणी में सामाजिक समरसता
   - सामाजिक समरसता एवं मीडिया/राजनैतिक नेतृत्व
   - जातिवादी राजनीति एवं सामाजिक समरसता
   - सामाजिक समरसता को बढ़ाने वाले त्यौहार, मेले एवं तीर्थ स्थल
2. **राष्ट्रीय एकता**
   - अर्थ, अवधारणा, आवश्यकता, महत्वपूर्ण घटक, इतिहास, वर्तमान दशा
   - प्राचीन भारतीय वाङ्मय में राष्ट्रीय एकता के तत्व
   - राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत/संत/महापुरुष
   - राष्ट्रीय एकता बनाम मीडिया/राजनैतिक नेतृत्व
   - धर्म ग्रन्थ/ संत वाणी में राष्ट्रीय एकता के तत्व
   - देश विभाजन के कारक एवं वर्तमान स्थिति
   - संविधान के प्रावधान व न्यायिक निर्णय
3. **सांस्कृतिक चेतना**
   - अवधारणा, आवश्यकता, महत्त्वपूर्ण घटक, इतिहास, वर्तमान दशा
   - विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का अध्ययन
   - सांस्कृतिक चेतना में विभिन्न संत/महापुरुषों का योगदान
   - विभिन्न तीर्थ स्थल, त्यौहार, मेले, लोक देवताओं की भूमिका
4. **विभिन्न जातियों, सम्प्रदायों का उद्गम, इतिहास, विविध शाखाएँ, समानताएँ**
   - जातियों के लोक देवता, वीर पुरुष, तीर्थ स्थल, वंश लेखक
   - मतांतरण (Conversion) का प्रभाव
5. **लोकदेवता व एकाधिक पंथों/जातियों में उनकी मान्यता**
6. **अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक अवधारणा**
   - विश्व तथा भारतीय परिप्रेक्ष्य
   - मानवाधिकार/सामाजिक समरसता के सन्दर्भ में अल्पसंख्यक अवधारणा व अधिकार
   - बहुपंथिक एवं जाति आधारित समाज में अल्पसंख्यक अवधारणा का औचित्य
   - अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक सन्दर्भ में जनांकिकीय (जनसंख्यात्मक) परिवर्तन व प्रभाव
   - जनांकिकीय (जनसंख्यात्मक) परिवर्तन एवं पूर्वोत्तर भारत
   - पंथनिरपेक्षता बनाम अल्पसंख्यकवाद
   - संबंधित संवैधानिक व विधिक प्रावधान तथा न्यायिक निर्णय
   - समानता का अधिकार बनाम अल्पसंख्यक प्रावधान
7. **धार्मिक सहिष्णुता/सर्वधर्म समभाव**
   - हिन्दू/ईसाई/इस्लाम का एक दूसरे के प्रति व अन्य पंथों के प्रति दृष्टिकोण

- स्त्री, विवाह, परिवार नियोजन, पर्यावरण आदि पर विभिन्न मजहबों की अवधारणा/विचार
- विभिन्न पंथ/मजहबों के समान रीति-रिवाज, व्यवहार
- चर्च का अंतर-पंथ संवाद (Interfaith Dialogue)

8. पंथनिरपेक्षता (Secularism)

- आशय, अवधारणा
- उद्गम, इतिहास, भारत एवं विश्व परिप्रेक्ष्य
- पंथनिरपेक्षता बनाम सर्वधर्म समभाव
- पंथनिरपेक्षता के तत्व, संवैधानिक व वैधानिक स्थिति, न्यायिक निर्णय
- भारतीय समाज व पंथनिरपेक्षता

9. जनांकिकीय (जनसंख्यात्मक) असंतुलन (सन्दर्भ-विभिन्न मजहब/अल्पसंख्यक -बहुसंख्यक समाज)

- धार्मिक जनसंख्या असंतुलन के कारण व प्रभाव
- ऐतिहासिक परिणाम, वर्तमान स्थिति, प्रभाव
- सामाजिक समरसता व जनांकिकीय असंतुलन
- घुसपैठ एवं जनांकिकीय असंतुलन

10. वंशावली संरक्षण, संवर्द्धन एवं संवहन

- वंशावली का महत्व, ऐतिहासिकता,प्रमाणिकता, स्वीकार्यता, न्यायालयों में साक्ष्य महत्व
- वंशावली लेखक समाज, राष्ट्रीय एकता एवं समरसता में योगदान, मतांतरित जातियों की वंशावलियाँ
- वंश-लेखक परम्परा
- वंशावली बहियों का संरक्षण, वंशावली लेखन की प्रविधियाँ

11. मतांतरण (Conversion-सामान्य प्रचलित शब्द धर्मांतरण)

- औचित्य, संवैधानिक पक्ष, न्यायालय निर्णय
- भारतीय एवं वैश्विक पक्ष
- मतांतरण का अधिकार व सीमा(मतांतरित होने व मतांतरित करने/कराने का अधिकार)
- मतांतरण से सामाजिक समरसता पर प्रभाव
- मतांतरण व विदेशी शक्तियां, मतांतरण के राजनैतिक अर्थ
- मतांतरण व मीडिया/राजनैतिक दल
- मतांतरण के सन्दर्भ में राज्य की भूमिका व दायित्व
- मतांतरित को आरक्षण व अन्य सुविधाओं का औचित्य
- मतांतरित जाति/समुदाय एवं पूर्व जाति/समुदाय के मध्य समन्वय के कारक
- मतांतरण व व्यक्तिगत विधि
- मतांतरण के बारे में विभिन्न धार्मिक समूहों की अवधारणा

12. परावर्तन (Reconversion)

- संवैधानिक स्थिति एवं न्यायिक निर्णय
- आरक्षण व अन्य सुविधाओं की उपलब्धता
- धर्मशास्त्रीय आधार
- ऐतिहासिक पक्ष

13. प्रकृतिपूजक समाज

- विश्व के विभिन्न प्रकृति पूजक समाज, उनकी ऐतिहासिकता, जनसंख्यात्मक पक्ष, वर्तमान स्थिति, रीति रिवाज, त्यौहार, भारत से संबंध आदि
- भारतीय संस्कृति का विश्व प्रसार

14. जनजातीय समाज (Tribes)

- विभिन्न जनजातियों के रीति रिवाज, धार्मिक मान्यता, लोक विश्वास, लोकाचार, लोक देवता, मतांतरण (Conversion) का प्रभाव, आरक्षण स्थिति, संवैधानिक प्रावधान एवं न्यायिक निर्णय

15. देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ

- आतंकवाद, अलगाववाद, प्रादेशिकता, नक्सलवाद, घुसपैठ, सांस्कृतिक आक्रमण, आर्थिक साम्राज्यवाद, जातिवाद, अस्पृश्यता, जनसंख्या असंतुलन, मतांतरण आदि
- समाधान के प्रयास

16. भारतीय सांस्कृतिक सामंजस्य के उभरते प्रतिमान

17. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का सातत्य

18. सर्वसमन्वयात्मक भारतीय प्रज्ञा (आत्मसातीकरण, भारतीयकरण)

19. विश्व के विभिन्न मत, पंथ, मजहब, धर्म

20. कुटुम्ब प्रबंधन

21. घुमन्तु, अर्द्धघुमन्तु तथा विमुक्त जाति-जनजाति

संस्थान के प्रमुख प्रकाशन

अ.भा. संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर द्वारा प्रकाशित प्रमुख साहित्य –

1. **आत्मसातीकरण का पुण्य प्रवाह**
   लेखक – डॉ. कृष्ण गोपाल
   पृष्ठ संख्या 24, मूल्य रु. 10/–

2. **इस्लाम का अंतर-दर्शन**
   लेखक – डॉ. श्रीरंग अरविन्द गोडबोले
   पृष्ठ संख्या 256, मूल्य रु. 200/–

3. **धर्म प्रचार का अधिकार : भ्रांतियाँ एवं निवारण – संविधान सभा में हुई बहस के संदर्भ में**
   लेखक – रामस्वरूप अग्रवाल
   पृष्ठ संख्या 32, मूल्य रु. 20/–

4. **अतीत से साक्षात्कार**
   सम्पादक – रामप्रसाद
   पृष्ठ संख्या 80, मूल्य रु. 100/–

5. **मतांतरण : चुनौतियाँ एवं विधिक समाधान**
   लेखक – रामप्रसाद एवं रामस्वरूप अग्रवाल
   पृष्ठ संख्या 84, मूल्य रु. 40/–

6. **ईसाईयत सिद्धान्त एवं स्वरूप**
   लेखक – डॉ. श्रीरंग गोडबोले
   पृष्ठ संख्या 304, मूल्य रु. 300/–

7. **इतिहास में गुर्जर समाज-पुनरावलोकन (स्मारिका)**
   सम्पादक – डॉ. गोपाल शरण गुप्ता
   एवं डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर
   पृष्ठ संख्या 144, मूल्य रु. 100/–

8. **शुद्धि आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास**
   लेखक – डॉ. श्रीरंग गोडबोले
   पृष्ठ संख्या 80, मूल्य रु. 40/–

9. **धर्मजागरण समन्वय के पुरोधा मुकुन्द आत्माराम पणशीकर**
   सम्पादक – डॉ. विनोद कुमार शर्मा
   पृष्ठ संख्या 280, मूल्य रु. 200/–

10. **साधु स्वाध्याय संगम**
    पृष्ठ संख्या 144, मूल्य रु. 75/–

सहयोगी प्रकाशन

1. **अ.भा. वंशलेखक दिग्दर्शिका**
   सम्पादक – डॉ. सुनील आसोपा, डॉ. सुखदेव राव, डॉ. सूरज राव तथा डॉ. विनोद कुमार शर्मा
   पृष्ठ संख्या 446, मूल्य रु. 200/–

2. **संविधान में धर्म स्वातंत्र्य का अधिकार, सिद्धांत, व्यवहार एवं चुनौतियाँ**
   लेखक – डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री
   पृष्ठ संख्या 200, मूल्य रु. 200/–

3. **सांस्कृतिक प्रवाह (जनांकिकी विशेषांक)**
   मुख्य सम्पादक – रामस्वरूप अग्रवाल
   अ.भा. संस्कृति समन्वय संस्थान
   पृष्ठ संख्या 192, मूल्य रु. 200/–

4. **वैदिक ऋषि परम्परा एवं वंशावलियाँ**
   सम्पादक – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
   एवं डॉ. विनोद कुमार शर्मा
   पृष्ठ संख्या 200, मूल्य रु. 150/–

उपरोक्त पुस्तकों को क्रय करने हेतु सम्पर्क करें–

प्रकाशन विभाग

अ.भा.संस्कृति समन्वय संस्थान

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

सम्पर्क : 0141-2973369 (का.) 9414312288 e-mail : editor.sprj@gmail.com

ISSN 2348-2796

Sanskritik Pravah

(A multi disciplinary refereed research journal dedicated to socio-cultural harmony)

B-19, Madhukar Bhawan, New Colony, Jaipur-302001
e-mail : editor.sprj@gmail.com website : www.sanskritikpravah.com
Contact : 0141-4038590 (4 PM Onwards), 094143-12288 (Chief Editor) 094600-70031(Editor)

Membership Form

1. For Institutions & Individuals :

Name: .....

Office Address : .....

.....

Email : .....

Contact No. : ..... Mobile : .....

2. For Individuals Only :

Academic Qualification : ..... Post Held .....

Postal Address : .....

.....

3. Mode of Payment (Please Tick ✓)

A. Cheque / D.D. No. ..... Date : .....
(Payble to "**Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvay Sansthan**")

B. Deposited in **SBI A/c. No : 38940233966** (Branch : Indira Bazar, Jaipur)

C. Cash/ UPI by Paytm, Bhim, Google Pay Etc.
A/C Name & No . (above) IFSC : SBIN0031403

D. Pay by Paytm, Bhim etc direct to Mobile : 9414312288
(After Payment, please inform Chief Editor or Editor)

Date :

Signature

Subscription Rates (Please Tick ✓)

Individuals		Institutions	
5 years	Life Time (15 years)	5 Years	Life Time (15 years)
(Rajasthan) ₹ 1000	₹ 2700	₹ 2200	₹ 6000
(Out of Rajasthan) ₹ 1100	₹ 3000	₹ 2200	₹ 6000

For Office Purpose :

Receipt No. ..... Date .....

Cheque/ D.D./ Bank Deposit/ Cash/ Paytm/ Google Pay (₹.....)

Signature

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.)

(सामाजिक अध्ययन एवं शोध केन्द्र)

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही देश के विभिन्न क्षेत्रों की भाषा, वेश-भूषा, खानपान, रीति-रिवाज, त्यौहार आदि भिन्न-भिन्न होते हुए भी सांस्कृतिक जीवन दर्शन की अन्तर्धारा एक ही बनी रही। सभी उपासना पद्धतियाँ या मजहब न केवल एक दूसरे के प्रति सहिष्णु रहे बल्कि सहअस्तित्व की भावना रखते हुए एक दूसरे का सम्मान भी करते रहे। भारतीय संस्कृति की इस धारा को अक्षुण्ण बनाये रखना आज की आधारभूत आवश्यकता है।

इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान के सामाजिक अध्ययन एवं शोध केन्द्र की स्थापना की गई है।

संस्थान द्वारा सामाजिक समरसता व अन्य संबंधित विषयों पर सेमिनार, कार्यशालाएँ आदि आयोजित की जाती हैं। अनेक पुस्तकों के प्रकाशन के साथ ही यह शोध पत्रिका 'सांस्कृतिक प्रवाह' भी इसी संस्थान द्वारा प्रकाशित की जा रही है।